प्रातः क्लास्   ओमशान्ति   19-8-67

ओमशान्ति। बेहद का बाप बैठ बेहद के बच्चों को समझाते है। अब प्रश्न उठता है बेहद का बाप कौन? यह तो जानते हो कि सब का एक ही है। जिसको परम पिता कहा जाता है। परन्तु पिता तो एक हो है। उनको सब बच्चे भूल गये है। इसलिए परम पिता परमात्मा जो दुख हर्ता, सुख कर्ता है उनसे सुख कोई को मिलता नहीं है। अब तुम बच्चे जानते हो बाप हमारे दुख कैसे हर रहा है, फिर सुख और शान्ति में चले जावेंगे। सब तो सुख में नहीं जावेंगे। कुछ सुख में कुछ शान्ति में चले जावेंगे। कोई सतयुग में पार्ट बजाते है, कोई त्रेता में कोई द्वापर में। तुम जब सतयुग में रहते हो तो बाकि सब मुक्ति धाम में। उनको कहेंगे ईश्वर का घर। मुसलमान लोग जब नमाज़ पढ़ते है तो सब मिल कर खुदा ताला की बन्दगी करते है। किस लिए? क्या बहिश्त के लिए या अल्लाह पास जाने लिए। अल्लाह के घर को बहिश्त नहीं कहेंगे। वहाँ तो आत्माएं शान्ति में रहती है। शरीर नहीं रहती। यह जानते होंगे अल्लाह के पास जिस्म नहीं। परन्तु हम आत्माएं जावेंगे। अब सिर्फ अल्लाह को याद करने से तो कोई पवित्र नहीं बन जावेंगे। अल्लाह को जानते ही नहीं। अब मनुष्यों को कौन राय देवे कि अल्लाह बाप आये सुख शान्ति का वर्सा दे रहे है। वा विश्व में शान्ति कैसे होती है। विश्व में शान्ति कब थी यह उन्हों को कैसे समझावें। सर्विस एबुल बच्चे जो है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उन्हों को यह चिन्तन रहता है। यह सब बातें मनुष्य नहीं समझते। तुम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों को ही बाप ने अपना परिचय दिया है। और सारी दुनिया के मनुष्य मात्र की पार्ट का भी परिचय दिया है। अब हम मनुष्य मात्र को बाप और रचना का परिचय कैसे देवें। बाप सब को कहते है अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम खुदा के घर चले जावेंगे। गोल्डन एज अथवा बहिश्त में सब तो जावेंगे। वहाँ तो होता ही है एक धर्म। बाकि सब शान्ति धाम में है। इसमें कोई को नाराज़ होने की तो बात ही नहीं। मनुष्य शान्ति मांगते है वह मिलती ही है। अल्लाह अथवा गाड फादर के घर में। आत्माएं सब आती भी है शान्ति धाम से। वहाँ फिर तब जावेंगे जब नाटक पूरा होगा। बाप आते भी है पतित दुनिया से सब को ले जाने। अभी तुम बच्चों की बुधि में है हम शान्ति धाम में जाते है। फिर सुख धाम में आवेंगे। यह है पुरुषोतम संगम युग। पुरुषोतम अथवा उत्तम ते उत्तम पुरुष। जब तक आत्मा पवित्र न बनी तब तक उत्तम पुरुष बन नहीं सकते। अब बाप तुमको कहते है मुझे याद करने से और सृष्टि चक्र को जानने से और साथ में दैवी गुण धारण करने से तुम पुरुषोतम बन जावेंगे। ऐसे नहीं कि सिर्फ याद से पुरुषोतम बन सकते है। नहीं, दैवी गुण भी धारण करनी है। पुरुषोतम बनने लिए। बाबा ने समझाया था कि इस समय सभी कि कैरेक्टर बिगड़ी हुई है। नई रचना में तो कैरेक्टर बहुत फर्स्ट क्लास होती है। भारतवासी ही ऊँच कैरेक्टर वाले थे। उन ऊँच कैरेक्टर वालों को कम कैरेक्टर वाले माथा टेकते है। उनकी कैरेक्टर कानि करते है। यह तुम बच्चे ही समझते हो। अब औरों को कैसे समझावें। कौन सी सहज युक्ति रचें। यह है आत्माओं का तीसरा नेत्र खोलना। बाबा की आत्मा में ज्ञान है। मनुष्य कहते है मेरे में ज्ञान है। यह देहाभिमान है। इसमें तो आत्माभिमानी बनना है। सन्यासि लोग की आत्मा में ज्ञान है शास्त्रों का। बाप का ज्ञान तो जब बाप आये देवे। युक्ति से समझाना है। वह लोग कृष्ण को भगवान समझ लेते। भगवान को जानते ही नहीं। ऋषि मुनि आदि भी कहते थे हम नहीं जानते। समझते है मनुष्य भगवान हो नहीं सकता। निराकार भगवान हो सकता है। उनका नाम रूप देश काल क्या है, रूप रंग क्या है। कुछ नहीं जानते तो कह देते नाम रूप से न्यारा है। इतनी भी समझ नहीं है कि नाम रूप से न्यारा वस्तु हो कैसे सकती। इमपासिबल है। अगर कहते पत्थर भित्तर में है कण कण में है तो वह तो नाम रूप हो जाता है। कब क्या कब क्या कहते रहते। बच्चों का दिन रात बहुत चिन्तन चलना चाहिए कैसे मनुष्यों को हम समझावे। यह मनुष्य से देवता बनने का पुरुषोतम संगम युग है। मनुष्य देवताओं को नमन करते है मनुष्य मनुष्य को नमन नहीं करता! मुसलमान लोग भी बन्दगी करते है। अल्लाह को बैठ कर याद करते है। तुम जानते हो वह लोग अल्लाह के पास तो पहुँच नहीं सकेंगे। मनुष्य चाहते है अल्लाह के पास कैसे पहुँचे। फिर अल्लाह कैसे नई

सृष्टि रचते हैं, यह सब बातें कैसे समझावें। इस के लिए बच्चों को विचार सागर मंथन करना पड़े। बाप को तो विचार सागर मंथन नहीं करना है। बाप विचार मंथन करने की युक्ति बच्चों को बतलाते हैं। इस समय सभी आयरन एज में तमोप्रधान हैं। जब कोई समय गोल्डेन एज भी होगी। तो गोल्डेन एज को प्युरिटी कहा जाता है प्युरिटी और इमप्युरिटी। सोने में भी खाद डाले जाते हैं ना। आत्मा पहले-पहले सतोप्रधान xx है फिर उनमें खाद पड़ती है। जब तमो xx प्रधान बन xx जाती है। तब बाप को आना है। बाप ही आये फिर सतोप्रधान सुखधाम बनाते हैं। सुखधाम x में सिर्फ भारतवासी ही होते हैं। बाकि सब शान्तिधाम में जाते हैं। शान्ति धाम में सब प्युअर रहते हैं। फिर यहाँ आकर आहिस्ते2 इमप्युअर बनते जाते हैं। हरेक मनुष्य सतोप्रधान से सतो रजो तमो में जरूर आते हैं। अब उन्हों को कैसे xx बतावें कि तुम सब अल्लाह के पास कैसे पहुंच सकते हो। देह के सब सम्बन्ध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। भगवानुवाच है ही। देह x धर्म सब छोड़ अपन को आत्मा समझो। मैं को याद करने यह जो 5भूत हैं निकल जावेंगे। तुम बच्चों को दिन प्रति दिन चिन्ता रहना चाहिए। बाप को x चिन्ता हुई तब तो ख्याल आया ना। कि जाऊं जाकर सब को सुखी बनाऊं। साथ में बच्चोंक को भी मददगार बनना है। अकेले बाप क्या करेंगे। तो यह विचार सागर मंथन करो। क्या ऐसा उपाय निकालें जाके मनुष्य झट समझ जाये। टाइम तो लगता है। अब इतने मनुष्यों को उसमें भी खास भारतवासियों को कैसे सुनसवें। सर्विस तो बच्चे करते भी हैं कोई अच्छी करते हैं कोई कम करते हैं। जैसे बच्चों ने सेमीनार किया। उसमें भी बहुत राय निकलते हैं। क्या युक्ति निकाले जो मनुष्य समझ जावें। कि यह पुरुषोत्तम x संगम युग है। इस समय ही मनुष्य पुरुषोत्तम बनते हैं। पहले ऊंच होते हैं फिर नीचे गिरते हैं। पहले2 तो नहीं गिरेंगे ना। आने से ही तो तमोप्रधान नहीं होंगे। हर चीज पहले सतोप्रधान फिर सतो रजो तमो होती है। बच्चे इतनी प्रदर्शनियाँ आद करते हैं फिर भी कुछ समझते नहीं हैं। तो और क्या उपाय करें। भिन्न2 उपाय तो करनी xx x पड़ती है ना। उनके लिए टाइम भी मिला हुआ है। झट से तो कोई सम्पूर्ण नहीं बन सकते। चन्द्रमा भी थोड़ा 2कर के आखिर सम्पूर्ण बनता है। हम भी तमोप्रधान बने हैं फिर सतोप्रधान बनने में तो टाइम लगता है। वह तो है जड़, यह है चैतन्य। तो हम कैसे समझावें। मुसलमान के मुरशिद को समझावें। तुम यह नमाज x क्यों पढ़ते हो। किसकी याद में पढ़ते हो। यह विचार सागर मंथन करना है। बड़े2 दिनों पर प्रेजिडेन्ट आद भी मस्जिद में जाते हैं। वहाँ से मिलते हैं। सभी मस्जिदों की फिर एक बड़ी मस्जिद होती है। वहाँ जाते हैं ईद मुबारक देने। अब मुबारक तो यह है x हम सब दुखों से xx x छूट सुखधाम में जावें। तब कहा जाये मुबारक हो। हम खुश खबरी सुनाते हैं। कोई विन करते हैं तो भी मुबारक देते हैं। कोई शादी करते हैं तो भी मुबारक देते हैं ख्याल सदैव सुखी रहें। अब xx तुम बच्चों को तो पता है, बाप ने समझाया है हम एक xx दो को मुबारक कैसे देवें। इस समय हम बेहद के बाप से मुक्ति जीवन मुक्ति का वर्सा ले रहे हैं। तुमको तो मुबारक मिल सकती है। बाप समझाते हैं तुमको मुबारक हो। तुम 21 जन्मों लिए पदम पति बन रहे हो। अब सभी मनुष्य कैसे बाप से वर्सा लें। सब को मुबारक दें। तुमको अभी पता पड़ा है। परन्तु xx तुमको मुबारक नहीं दे सकते। तुमको जानते ही नहीं। मुबारक देवें तो खुद भी मुबारक पाने लायक बनें। तुम तो गुप्त होना। तुम एक दो को मुबारक दे सकते हो। मुबारक हो हम x बेहद के बाप के बने xx है। तुम कितनी खुश नसीब हो। कोई को लाटरी मिलती है या बच्चा जन्मता है तो कहते हैं मुबारक हो। बच्चे पास होते हैं तो भी मुबारक देते हैं। तुमको तो दिल ही दिल में x खुशी होती x है। अपन को मुबारक देते हो। हमको बाप मिला है जिससे हम वर्सा ले रहे हैं। अब कैसे समझावें जो समझें हम अपने को मुबारक देते हैं। बाप समझाते हैं आत्माएं जो दुर्गति को पाई हुई हो सो अब सद्गति को पाते हो। मुबारक तो एक ही सबको x ती है। पिछाड़ी से सबको मालूम पड़ेगा जो ऊंच ते ऊंच x बने उनको नीचे वाले कहेंगे मुबारक हो आप मरजीवी कुल

में महाराजा महारानी बनते हो। नीचे कुल वाले मुबारक उनको देंगे। जो विजय माला के दाने बनते हैं। जो पास होंगे उन को मुबारक मिलेगा। उनकी ही पूजा होती है। आत्मा को भी मुबारक हो। जो उंच पद पाती है। फिर भक्ति मार्ग में उनकी पूजा होती है। मनुष्यों को पता नहीं है कि क्यों पूजा होती है। तो बच्चों को यही चिन्ता रहनी है कि कैसे समझावें। हम पवित्र बनें है दूसरे को कैसे पवित्र बनावें। दुनिया तो बहुत बड़ी है ना। क्या किया जाये जो घर2 में पैगाम पहुंचावें। पत्रे गिराने से तो सबको मिलती ही नहीं है। यह तो एकेक को हाथ में पैगाम चाहिए। क्यों कि सब है अंधे के औलाद अंधे। उनको बिलकुल पता नहीं है कि बाप के पास कैसे पहुंचें। कह देते हैं सब रास्ते परमात्मा से मिलने के हैं। परन्तु बाप कहते है यह भक्ति तो जन्म जन्मान्तर करते आये हो। दान पुण्य आद करते आये हो। परन्तु रास्ता मिला कहां। कह देते है यह सब अनादी चलता आया है। परन्तु कब से शुरू हुआ यह पता नहीं। अनादी का अर्थ नहीं समझते।। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते है। यह भक्ति का कल्प आधा कल्प होता है। सतयुग मे होता नहीं। वह है ज्ञान का प्रालब्ध 21 जन्म। वह है सुख भक्ति में है दुख। बच्चे जानते हैं हम 63 जन्म भक्ति करते आये हैं। यह भी समझते नहीं है। कोई बहुत भक्ति करते है। वह लोग इस जन्म के बहुत भक्ति समझते है। तुम बच्चों को हिसाब समझाया जाता है। जिसने बहुत भक्ति की है। यह सब ऐसे की बातें एकेक को तो नहीं समझाये सकते है। क्या करें। कोई अखबार में डालें। टाईम तो लगेगा। सब को पैगाम तो इतना जल्दी मिल भी न सके। सब पुरुषार्थ करने लग पड़े तो फिर स्वर्ग में भी आ जायें। यह हो नहीं सकता। अब तुम पुरुषार्थ करते हो स्वर्ग के लिए। अब हमारे जो धर्म वाले हैं उनको कैसे निकालें। कैसे पता पड़े कौन2 कन्वर्ट हुये हैं। हिन्दू धर्म वाले असल में देवी देवता धर्म के है। यह भी कोई जानते नहीं। कोई हिन्दू होंगे तो अपने आदी सनातन देवी देवता धर्म को मानेंगे। देवी देवता धर्म वाले कौन है यह मालुम कैसे पड़े। बाप कहते है एक तो शिव की पुजारियों को पकड़ो। बाप को याद करते हैं वर्सा लेने लिए। शिव के भक्त को तुम समझाये सकते हो। शिव बाबा है सब का बाप तो अभी ऐसे नहीं कहेंगे कि वह ठीकर भीतर सब में है। बाप का तो एक ही रथ मुकरर है। इस भागीरथ में प्रवेश कर पतितों को पावन बनाते हैं। ठीकर भितर में हो कैसे सकते। बाप से इन देवी देवताओं को वर्सा मिलता है। बनते हैं कलयुग और सतयुग के बीच संगम पर। अब यह औरों को कैसे समझावें। कि यह पुरुषोत्तम संगम युग है। पुरुषोत्तम अर्थात उंच ते उंच पुरुष तो देवताओं को ही कहा जाता है। यह (लक्ष्मी नारायण) गोल्डेन एजेड पारस बुद्धि। वह ही फिर पत्थर बुद्धि बनते हैं। भारत ही गोल्डेन एजेड फिर आयरन एजेड बनते है। तो यह समझाना पड़े उंच ते उंच भगवान बाप है। उन से हम वर्सा कैसे लेवें। इस समय तो सब पतित हैं। बुलाते भी हैं हे पतित पावन. निराकार को ही याद करते है। और किसको नहीं। आत्मा पतित पावन बाप को बुलाती हैं। कि हमको आकर पावन बनाओं। उनका समय है ही कलयुग अन्त और सतयुग आद का। पावन बनाये फिर पावन दुनिया में ले जाते है। इन्हों (लक्ष्मी नारायण) ने इतना बड़ा राज्य किस से लिया। कैसे लिया। भारत में इस समय तो कोई राजाई तो है नहीं। जिस से जीत कर राज्य लिया हो। वह कोई लड़ाई कर तो राजाई नहीं पाते हैं। मनुष्य से देवता को बना जाता है। कोई को पता नहीं है। तुमको भी अभी बाबा से पता पड़ा है। औरों को कैसे बतावें। जो मुक्ति जीवनमुक्ति को पावें। पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए ना। जो अपन को जान और अल्लाह को याद करे। बोलो तुम ईद की मुबारक कहते हो। तुम अल्लाह पास जा रहे हो। पक्का निश्चय है? जिसके लिए तुमको इतनी खुशी होती है। यह तो तुम कबों से करते आये हो। तुम्हारी ईद मुबारक कबों से चली आती है। कब खुदा के पास जावेंगे या जावेंगे ही नहीं। नमाज पढ़ेंगे। दरोबर हम जो यह पढते है क्या करने लिए। उंच ते उंच तो एक अल्लाह ही है। बोलो अल्लाह के बच्चे तुम भी आत्मा हो ना। आत्मा चाहती है हम अल्लाह के घर जावें। वहां कैसे जावेंगे। इस समय तो सब पतित आयरन एजेड है। दोजख है। बहिश्त तो है नहीं। अब तुम अल्लाह के पास कैसे जावेंगे।

यह बताओ। बताये न सकेंगे। सदैव दोज़ख तो नहीं होता है। बहिश्त भी तो होता है ना। आत्मा पहले2 प्योर थी। फिर पतित बनी है। अब इनको बहिश्त तो नहीं कहेंगे। सब आत्मायें पतित है। पावन कैसे बने जो अल्लाह के घर जायें। वहां विकारी आत्मा होती नहीं। वायसलेस होनी चाहिए। आत्मा कोई पट से तो सतोप्रधान नहीं बनती। यह सब विचार सागर मथन किया जाता है। बाबा का विचार सागर मथन चलता है। तब तो समझाते है ना। युक्तियां निकालनी चाहिए किसको कैसे समझावें। मठ के एक दो बड़ें को पकड़ो। जो फिर सब को समझावें। विचार सागर मथन कर युक्ति निकालनी होती है। सर्विस एबल बच्चे ही मथन कर फिर सर्विस कर सकेंगे। मथन चलता हैं ना इस टापिक पर ऐसे2 समझावेंगे। जिनका मंथन चलता हैं वह फिर सर्विस भी करते है। मथन जो नहीं करते वह सर्विस एबल नहीं हैं। खुद भी समझते होंगे तो हेडस जो है उन्हों को पकड़ने से आवाज़ जल्दी निकलेगा। कहेंगे यह सन्यासि आद बिल्कुल उल्टा सुनाते हैं। यह सब झूठ बोलते हैं। आवाज़ ही चट हो जाये। बड़े2 पोप पादरी है उनको थोड़े ही मालूम हैं कि यह है संगम का समय। जाप करते है मामेकं याद करो और कोई समझायें न सके। पोप समझाते हैं लड़ाई न करो। उनका भी मानते थोड़े ही हैं। अब इन से कोई बड़ा चाहिए। तुम तो हो बिल्कुल साधारण। पोप को भी समझाने की तुम ने कोशिश की। परन्तु शायद समय नहीं है। जल्दी समझ जाये तो रिवोलेशन हो जाये। समझते तो हैं ना दुनिया ही खतम हो जावेगी। इतना समझते जरूर है कि खुदा का हाथ हैं। जो नई दुनिया की स्थापना करावे और पुरानी दुनिया का विनाश कराते हैं। गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश कराता हूं। खुदा का हाथ तो है ना। बच्चे जानते हैं कल्प पहले मुआफिक हम फिर से राज्य लेंगे। स्थापना विनाश, पालना त्रिमूर्ती का चित्र लगा हुआ है। परन्तु पूरी रीत कोई समझते नहीं। भल कहा जाता है शंकर द्वारा विनाश परन्तु बाबा कहते है क्या कि विनाश करो। यह तो ड्रामा अनुसार आटोमेटकली कर्मातीत अवस्था का टाईम होगा तो विनाश होगा। प्रेरणा की कोई बात नहीं। आज फलाने चीज खाने की प्रेरणा नहीं हैं अर्थात विचार नहीं हैं। बाकि प्रेरणा और कुछ नहीं है। प्रेरणा का अर्थ और कुछ होता नहीं। तो औरो का भी कल्याण करना है। बहुतों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा। अपन को भी दैवी गुणों में लाना है। किसका कल्याण हो नहीं करते तो पूछ कर शं क्या करेंगे कि इस हालत में मर जावें तो क्या होगा। धूर भी नहीं मिलेगा। समझते हैं हम बाबा के पास रहते है। परन्तु करते क्या हो। अपन ही पढ़े आगे भी छोड़ेंगे। यह तो सिधी बाते है तो जितना हो सके सवेरे उठ कर विचार सागर मथन करना है। भक्ति भी मनुष्य सवेरे उठ करते हैं।। अगर कहते हैं कृष्ण ने राजयोग सिखाया, उसने भी गाली खाई तो जरूर तुमको भी गाली खानी पड़े। शिव बाबा को भी गाली देते है। ठीकर भीतर में कह देते। ब्रह्मा को भी ढेर गाली देते हैं। उनसे डरते नहीं हैं। भल भूं2 करते रहते तुम अपनी शान्ति में रहो। खुशी रहनी चाहिए हमको तो बाबा मिला है। हम सब दुखों से छूटने वाले है। अच्छा पुरुषार्थ करने वाले ही दिल पर चढ़ते हैं। अपन को देखना चाहिए इस हालत में हमको क्या पद मिलेगा। यह तो कल्प2 की बात होती हैं। सर्विस के लिए कुछ न कुछ विचार सागर मंथन करना है। और 2 समाचार पूछने, प्रमुईन्डिंग मुई करने से तो बोलो शिव बाबा की याद में रह काम करो। झगड़ों में भी एक दो को ऐसे शिव बाबा की याद दिलाते रहो। रहमदिल बनना है। अपन पर भी औरों पर भी रहम करना हैं। नहीं तो जरूर बेरहमी करते हो। परन्तु कोई2 बिल्कुल सुधरेंगे नहीं। कुत्ते का पूंछ कब सिधा न होगा। तब बाबा भी मिसाल देते हैं क्या जाने सरमन्डल की साज़ से ... देहाभिमानी क्या समझेंगे वह तो जंगली काम ही करते रहेंगे। मित्र संबंधी आद बुलाते हैं तो उनकी भी सर्विस करनी है। सच्ची दिल से जो समझते होंगे वह ही समझायें सकेंगे। नहीं तो अल्प... समझाने का भी अक्ल नहीं आवेगा। योग हो तब किसको तीर भी लगे। जौहर ही नहीं होगा तो तीर लगेगा ही नहीं। योग भी चाहिए ना। योग की जौहर बिगड़ तलवार क्या काम की। जितना याद में रहेंगे उतना जौहर भरेगा। इस याद में ही विघ्न पड़ती है।

शेष।